|| श्री गणेश चालीसा ||

|| दोहा ||

जय गणपति सदगुण सदन | कविवर बदन कृपाल |
विघ्न हरण मंगल करण | जय जय गिरिजालाल ||
जय जय गिरिजालाल | जय जय गिरिजालाल ||

|| चौपाई ||

जय जय जय गणपति गणराजू | मंगल भरण करण शुभ काजू ||
जय गजबदन सदन सुखदाता | विश्व विनायक बुद्घि विधाता ||
वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन | तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन ||
राजत मणि मुक्तन उर माला | स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला ||
पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं | मोदक भोग सुगन्धित फूलं ||
सुन्दर पीताम्बर तन साजित | चरण पादुका मुनि मन राजित ||
धनि शिवसुवन षडानन भ्राता | गौरी ललन विश्व-विख्याता ||
ऋद्धि सिद्धि तव चँवर सुधारे | मूषक वाहन सोहत द्वारे ||
कहौ जन्म शुभ-कथा तुम्हारी | अति शुचि पावन मंगलकारी ||
एक समय गिरिराज कुमारी | पुत्र हेतु तप कीन्हो भारी ||
भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा | तब पहुंच्यो तुम धरि द्विज रुपा ||
अतिथि जानि कै गौरि सुखारी | बहुविधि सेवा करी तुम्हारी ||
अति प्रसन्न ह्वै वर दीन्हा | मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा ||
मिलहि पुत्र तुहि बुद्धि विशाला | बिना गर्भ धारण यहि काला ||
गणनायक गुण ज्ञान निधाना | पूजित प्रथम रुप भगवाना ||
अस कहि अन्तर्धान रुप ह्वै | पलना पर बालक स्वरुप ह्वै ||
बनि शिशु रुदन जबहिं तुम ठाना | लखि मुख सुख नहिं गौरि समाना ||

सकल मगन सुखमंगल गावहिं | नभ ते सुरन सुमन वर्षावहिं ||
शम्भु उमा बहुदान लुटावहिं | सुर मुनि जन सुत देखन आवहिं ||
लखि अति आनन्द मंगल साजा | देखन भी आये शनि राजा ||
निज अवगुण गुनि शनि मन माहीं | बालक देखन चाहत नाहीं ||
गिरिजा कछु मन भेद बढ़ायो | उत्सव मोर न शनि तुहि भायो ||
कहन लगे शनि मन सकुचाई | का करिहौ शिशु मोहि दिखाई ||
नहिं विश्वास उमा उर भयऊ | शनि सों बालक देखन कह्यऊ ||
पडतहिं शनि दृग कोण प्रकाशा | बोलक सिर उड़ि गयो अकाशा ||
गिरिजा गिरीं विकल ह्वै धरणी | सो दुख दशा गयो नहीं वरणी ||
हाहाकार मच्यो कैलाशा | शनि कीन्ह्यों लखि सुत का नाशा ||
तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधाये | काटि चक्र सो गज शिर लाये ||
बालक के धड़ ऊपर धारयो | प्राण मंत्र पढ़ि शंकर डारयो ||
नाम गणेश शम्भु तब कीन्हे | प्रथम पूज्य बुद्घि निधि वर दीन्हे ||
बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा | पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीन्हा ||
चले षडानन भरमि भुलाई | रचे बैठ तुम बुद्घि उपाई ||
चरण मातु-पितु के धर लीन्हें | तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें ||
धनि गणेश कहि शिव हिय हरषे | नभ ते सुरन सुमन बहु बरसे ||
तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई | शेष सहस मुख सकै न गाई ||
मैं मति हीन मलीन दुखारी | करहुं कौन विधि विनय तुम्हारी ||
भजत रामसुन्दर प्रभुदासा | जग प्रयाग ककरा दुर्वासा ||
अब प्रभु दया दीन पर कीजै | अपनी भक्ति शक्ति कछु दीजै ||
श्री गणेश यह चालीसा | पाठ करै कर ध्यान ||

|| दोहा ||

नित नव मंगल गृह बसै | लहे जगत सन्मान ||
संभंध अपने सहस्त्र दश | ऋषि पंचमी दिनेश ||
पूरण चालीसा भयो | मंगल मूर्ति गणेश ||
मंगल मूर्ति गणेश | मंगल मूर्ति गणेश ||

www.hanumanchalisalyric.com